४. वादन

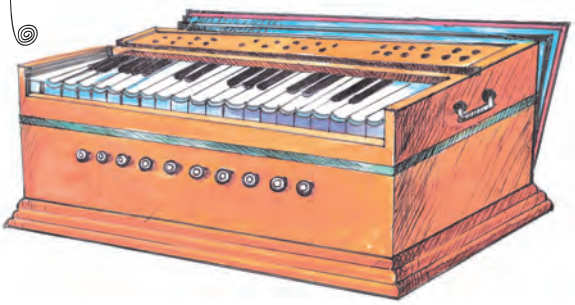

वादन परिचय

गीता मधुर स्वभाव की शांत और गुणवान लड़की थी । किसी के साथ बहुत ज्यादा नहीं बतियाती थी । खेलती भी नहीं थी । निरंतर कुछ विचार करती रहती थी । उसे पत्तों की सरसराहट सुनना बहुत भाता था । पानी के बूँदों की टप–टप हो या कठफोड़वा पक्षी की पेड़ के तने पर टक–टक हो इन आवाजों को वह मन लगाकर सुनती थी । पूजा घर की छोटी–सी घंटी की टुन–टुन और पाठशाला एवं मंदिर के घंटे का बड़ा नाद कैसे निर्माण होता है इस पर वह सोचा करती । विभिन्न वस्तुओं का एक दूसरे पर आघात हो या दो वस्तुएँ एक दूसरे से टकरा जाएँ तो उनमें से एक विशेष प्रकार की आवाज कैसे निर्माण होती है, उसकी समझ में कुछ नहीं आता ।

इसी शंका के साथ वह पाठशाला में संगीत सिखाने वाली शिक्षिका के पास गई । शिक्षिका ने उसे बहुत अच्छे से समझाकर कहा, ‘‘यह देख गीता,

- हवा की सहायता से बजाए जाने वाले वाद्य अर्थात सुषिर वाद्य ।
- चमड़े से मढ़े गए वाद्य अर्थात अवनद्ध वाद्य ।
- तार वाले वाद्य अर्थात तंतु वाद्य ।
- घन वस्तुएँ एक–दूसरे पर आघात करके बजाए जाने वाले वाद्यों को घन वाद्य कहते हैं ।

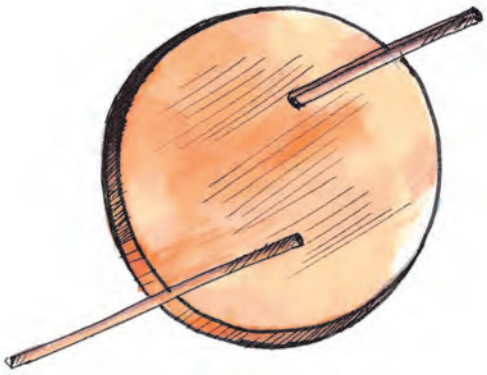

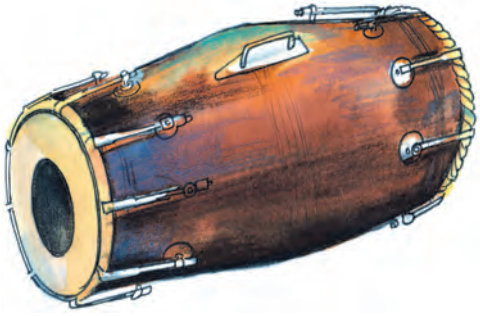

इनमें मंजीरा, झाँझ, करताल, लेजिम, टिपरी, घंटा, ट्रैंगल, खँजरी आदि वाद्यों का समावेश होता है ।

शांत जल में कंकर डालने पर जैसी तरंगे निर्माण होती हैं ठीक उसी तरह की ध्वनितरंगें इन वाद्यों में निर्माण होती हैं । इस कारण इन वाद्यों की आवाज हमें आती है । इन वाद्यों की विशेषता यह है कि इनमें आघात से आवाज की निर्मिति होती है । इन वाद्यों का उपयोग साथ संगत के लिए होता है ।

जानकारी देते–देते संगीत शिक्षिका गीता को संगीत की कक्षा में ले गई । पूरा कमरा वाद्यों से भरा हुआ था । वहाँ उसे कई प्रकार के वाद्य देखने को मिले । तबला, हारमोनियम, ढोलक, सितार, बाँसुरी, मंजीरा, झाँझ, टिपरियाँ, खँजरी, लेजिम, वायोलिन, तुरही, शंख, शहनाई, सारंगी... बाप रे । इन सभी वाद्यों के नाम ध्यान में रहेंगे क्या? मित्रो, चित्र के सभी वाद्यों के नाम पहचानो तो ।

◆ चित्र के वाद्यों का निरीक्षण करके नाम बताएँ । संभव हो तो विद्यार्थियों को वाद्यों का उपयोग करने दें । उपलब्ध वाद्यों का परिचय दें ।